Lecture-100.

मौर्यकला की मुख्य विशेषताओं का आलोचना व्याख्या

— Mamta Rani
Guest Assist. Professor
Deptt. of History
SNSRKS College,
Saharsa.

BA Part-1.
Paper-1.

उत्तर →

राजकीय कला

प्राक्मौर्य ← * राजप्रसाद – कुम्हरार

* स्तंभ लेख – इलाहाबाद
दिल्ली मेरठ
दिल्ली टोपरा
लौरिया नंदनगढ़
लौरिया अरेराज

* स्तूप   रामपुरवा
दिव्यावदान - 8400

* गुहालेख
गया – बराबर पहाड़ी
नागार्जुनी पहाड़ी
सुदामा   लोमहर्ष
गोपी   विश्व झोपड़ी
सबसे बड़ा

जनकला

* यक्ष - यक्षिणी (चामरग्राहिणी) की मूर्ति - दीदारगंज पटना

* मृदभाण्ड

* अन्य धर्मों से संबंधित मूर्ति
→ लोहानीपुर बौद्ध धर्म
→ मथुरा - परखम जैन धर्म

- अगांत मुखी कमल (उल्टा)

निष्कर्ष :- मौर्य कला विदेशी नहीं थी बल्कि पूर्णतः स्वदेशी जैसा कि हड़प्पा सभ्यता से लिया गया माना जा सकता है।

प्राचीन भारत के इतिहास मे मौर्यकला का विशिष्ट स्थान है क्यो कि मौर्य वंश के शासको ने कला के क्षेत्र मे जो आधार तैयार किया उसी पर चलकर गुप्त वंश के शासको ने विशाल इमारत खड़ा कर दिया जिसके लिए स्वर्ण काल की संज्ञा दे दिया गया। अध्ययन की सुविधा के लिए मौर्य कला दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है।

राजकीय कला मौर्य वंश के शासको के संरक्षण मे विकसित हुआ इस लिए यह जनकला की तुलना मे अधिक विकसित दिखाई पड़ता है क्यों कि यहाँ पर धन का आभाव नहीं था इसके अन्तर्गत निम्न लिखित तथ्यो को शामिल किया जा सकता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने पटना के कुम्हरार नामक स्थान पर 80 स्तंभों

विश्व झोपड़ी लोमसऋषि आदि महत्वपूर्ण है। इनमें गोपी नामक गुफा सबसे बड़ी है। गुफाओं के दिवारों पर लेख अंकित किया गया है।

राजकीय कला की तुलना में जनकला कम विकसित था लेकिन आमलोगों ने कला के क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया यही बहुत बड़ी बात है। यह स्वभाविक है कि धन की अभाव में कला का पूर्ण विकास संभव नहीं है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया जाता है:-

मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत बहुत सारे स्थलों से यक्ष यक्षिणी की मूर्ति का निर्माण किया गया था। जिसमें पटना के दिदारगंज से प्राप्त यक्षिणी की मूर्ति जनकला की सबसे मुख्य विशेषता है। चामरग्राहिणी नामक यह मूर्ति आज भी पटना संग्रहालय में सुरक्षित है। इसकी शारिरिक बनावट इसकी सजीवता को प्रदान करता है और तत्कालिक समय के कलाकार तथा तकनीक के महत्व भी उजागर होता है।

मौर्यकालिन अधिकांश स्थलों से मृद्भाण्ड प्राप्त हुआ है जिसे उत्तरीकला पॉलिसदार मृद्भाण्ड कहा जाता है इसकी मुख्य विशेषता इसपर किया गया पॉलिस है जो आज भी बरकरार है।

जनकला के अन्तर्गत पटना के लोहानीपुर से दो नग्न मूर्ति और मथुरा के परखम नामक स्थान से एक मूर्ति प्राप्त हुआ है जिसको जैन धर्म का माना जाता है जो तत्कालिक समय के धर्म निरपेक्षता को प्रकट करता है। जनकला के मुख्य विशेषताओं में शारीरिक बनावट में असमानता, बेडौलपन किन्तु स्वभाविकता का बोध होता है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि मौर्य कला एक देशी कला का परिचायक है और हड़प्पा सभ्यता की निरंतरता की देन के रूप में हमलोग मान सकते हैं।

*** *** ***

वाला राजमहल का निर्माण कराया जिसकी मुख्य विशेषता लकड़ी का किया गया प्रयोग था। इसके अवशेष अभी भी कुम्हरार में सुरक्षित रूप से देखा जा सकता है।

कुछ विद्वानों ने इस राजप्रसाद को ईरान की देन माना है इसके अनुसार ईरान की प्राचीन राजधानी पार्सीपोलिस में जो महल बनाया गया था उसी का अनुकरण यह राज प्रसाद है जो कि तर्कसंगत नहीं है क्यों कि हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत बड़े - बड़े इमारत का निर्माण हुआ था। अतः हम कह सकते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसी का अनुकरण किया था।

राजकीय कला की सबसे प्रमुख विशेषता अशोक द्वारा बनवाया गया स्तंभ लेख है जिसे राजकीय आदेश के रूप में जारी किया गया। कुछ प्रमुख स्तंभ लेख का नाम निम्नलिखित है जैसे इलाहाबाद स्तंभलेख, दिल्ली मेरठ, दिल्ली टोपरा, लौरिया नंदनगढ़, लौरिया अरेराज, रामपुरवा आदि। यह स्तंभलेख एकाश्मक है और बलुआ पत्थर से निर्मित है। इसकी चमक आज भी बरकरार इसकी आधार चौड़ा और शीर्ष आधार की तुलना में पतला बनाया गया। शिर्ष पर अवाग मुरवी (उल्टा) कमल और उसके उपर विभिन्न पशुओं के मूर्ति स्थापित किया गया है जो बिल्कुल ही सजीव प्रतित होता है। जैसे - रामपुरवा अभिलेख में वृषभ की मूर्ति। इस स्तंभ लेख पर चक्र की आकृति भी अंकित किया गया है। लौरिया नंदनगढ़ के स्तंभ लेख पर मयूर का सजीव चित्र अंकित किया गया है जो इनलोगों का राजकीय चिह्न भी था। कुछ विद्वानों ने स्तंभ लेख को भी ईरान की देन माना है जो सही नहीं है क्योंकि इसमें ईरानी स्तंभलेख में जोड़ दिखाई पड़ता और अंदर से यह खोखला भी है तथा आधार और शीर्ष की चौड़ाई भी एक समान है।

स्तूप के अन्तर्गत भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर के अवशेष पर अर्द्धचन्द्र आकार का ईंटों के प्रयोग द्वारा निर्मित इमारत को स्तूप कहा गया है। बौद्ध ग्रंथ दिव्यावदान में अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण कराया। इसकी मुख्य विशेषता इसमें किए गए ईंटों का प्रयोग है। जैसे - साँची का स्तूप (MP)।

स्तूप के साथ-साथ अशोक और उसके पौत्र दशरथ ने गया के बराबर और नागअर्जुनी पहाड़ी में आजीवकों के लिए गुफा का निर्माण निर्माण कराया। इसमें सुदामा, गोपी